श्री कृष्ण दत्त (शिमला) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं नियम 377 के अन्तर्गत पहाड़ों पर स्थित छावनियों के निवासियों की 1947 के बाद दयनीय दशा की ओर सरकार का ध्यान दिया चाहता हूं ।

अंग्रेजों के भारत से जाने के बाद कसौली, डगशाई, जतोग तथा अन्य जितनी भी सैनिक छावनियां पहाड़ी इलाक़ों में स्थित थीं, वहां रहने वालों की आर्थिक दशा बहुत बुरी तरह से खराब हो गई है । मकानात खाली पड़े है, क्योंकि वहां पर कोई बड़ी आबादी नही है, जिससे उनका व्यापार चल सके और न ही कोई रोजगार के साधन है। अतः सरकार का नैतिक कर्त्तव्य हो जाता है कि वह इन छावनियों की तरफ विशेष ध्यान दे तथा वहां पर कुछ बड़े उद्योग आदि लगाये जायें । साथ ही इन शहरों मे रहने वाली आबादी को ऋण सुविधा तत्काल प्रदान की जाये, जिससे वे अपने मकानात आदि ठीक रख सकें तथा सरकार वहा पर अपने कार्यालय खोले, ताकि लोग अपना व्यवसाय कर के गुजारा कर सकें ।

(v) NEED FOR AFFORESTATION IN HILLY TRIBAL AREAS.

श्री दिलीप सिंह भूरिया (झाबुआ): उपाध्यक्ष महोदय; मैं नियम 377 के अन्तर्गत एक महत्वपूर्ण विषय की ओर सरकार का ध्यान दिलाना चाहता हूं ।

देश के आदिवासी इलाक़ों में जंगलों की अवैध कटाई से जंगल नष्ट हो गये है । इन क्षेत्रों के आदिवासियों के जीवन-यापन एवं रोजगार का प्रमुख स्रोत जंगल ही थे । विशेषकर पहाड़ी इलाक़ों में जंगल कट जाने से आदिवासी बेरोजगार हो गये हैं एवं अपने गांव छोड़ कर हजारों मील दूर मेहनत-मजदूरी करने जाते हैं । आदिवासियों में इस कारण बहुत ही भयंकर असंतोष व्याप्त है । यदि आदिवासियों को मजदूरी के लिए अपने गांवों से इसी प्रकार पलायन चलता रहा, तो भारतीय आदिम जाति संस्कृति भी नष्ट हो जायेगी ।

अतः शासन को आदिवासी पहाड़ी क्षेत्रो में ऐसी विशेष योजनायें बना कर वन लगाने चाहिए, जिससे वन नष्ट न हों एवं आदिवासियों को रोजगार उपलब्ध हो सके ।

(vi) NEED TO ERADICATE PARTHENIUM WEED IN THE COUNTRY

SHRI T. R. SHAMANNA (Bangalore South): Parthenium is a pernicious weed. In recent days its menace is spreading uncontrolled in different parts of the country. In Karnataka thousands of hectares of valuable agricultural land (more than 50,000 hectares) is covered by this weed causing damage to food crops. Experts are of the opinion that this weed is a health hazard to human and domestic animals also.

It is said that the weed got into India with imported grains about 20 to 25 years back. The weed is rampant in uncultivated lands and is now making its ugly appearance in cultivated lands in a large measure. It flowers profusely and lakhs of seeds are distributed. This pest weed deprives plant nutrients and moisture available to cultivated crops causing loss of several thousand quintals of grains.

It is very necessary that this monstrous pest plant is to be removed. Rainy season is the best period to eradicate this plant. If it is allowed to grow and spread, this weed will rise in an unimaginable proportion and magnitude polluting the whole environment.

The plant will have to be removed with its roots and burnt before it diffuses. A plant is capable of sending to atmosphere 15,000 to 20,000 seeds.

Chemical control, chemical method weed control may be necessary where